संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो। हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के बहुमूल्य नाम में अभिवादन करती हूँ।

यूहन्ना 3:16 "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

आज भी यीशु की उपस्थिति हमारे साथ है। वह अल्फा और ओमेगा – आदि और अंत है। हम उसे एक पिता, एक दोस्त, एक साथी के रूप में ले सकते हैं। जिस भी रूप में हम उसे लेते हैं, वह हमारी मदद करने के लिए तैयार है। हमें स्वर्ग से भेजे गए चिह्न पर विश्वास करना चाहिए। हमें यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए। वह हमसे कभी दूर नहीं है, बल्कि, वह हमेशा हमारे करीब है।

परमेश्वर ने मरियम से बात करने के लिए जिब्राईल स्वर्गदूत को भेजा और उस फैसले के बारे में जाने जो वह तब लेगी जब स्वर्गदूत उससे बात करेगा। परमेश्वर पिता और पवित्र स्वर्गदूत पूरी लगन से इस खुशखबरी के लिए मरियम की प्रतिक्रिया का इंतजार कर रहे थे। यीशु मसीह को इस दुनिया में जन्म लेना पड़ा; पिता परमेश्वर किसी भी रूप में यीशु मसीह को भेज सकते थे, लेकिन उन्होंने उसे इस दुनिया में एक आदमी के रूप में भेजने के लिए चुना। इस प्रकार, जिब्राईल स्वर्गदूत नासरत के पास आया और उसने मरियम से कहा, लूका 1:31 "और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना।"

परमेश्वर ने सोचा कि मरियम इस खबर को कैसे स्वीकार करेगी, क्या वह इस खबर को विश्वास और भरोसा में स्वीकार करेगी। विश्वास और भरोसा के बिना कोई भी कार्य पूरा नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार, पिता परमेश्वर, उनके पुत्र यीशु और जिब्राईल स्वर्गदूत ने ध्यान से सुना कि मरियम को इस खुशखबरी के लिए क्या कहना है। मरियम ने जिब्राईल स्वर्गदूत को क्या कहा? लूका 1:34 "मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरूष को जानती ही नहीं।" मरियम स्वर्गीयदूत से यह खबर सुनकर थोड़ा परेशान हुई; वह जानती थी कि एक बच्चे को शादी से पहले पैदा करने की सजा मूसा के

कानून के अनुसार 'पत्थर मारकर मृत्यु' से होती थी। मरियम ने सोचा "मैं यह सब कैसे सहन कर सकती हूँ? प्रभु मुझे इस कठिन निर्णय के माध्यम से रखने की योजना क्यों बना रहे है?" लूका 1: 35–37 "स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। 36 और देख, और तेरी कुटुम्बिनी इलीशिबा के भी बुढ़ापे में पुत्र होनेवाला है, यह उसका, जो बांझ कहलाती थी छठवां महीना है। 37 क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरिहत नहीं होता।

हम सब सच्चाई जानते हैं कि आदम और हव्वा को परमेश्वर द्वारा कैसे बनाया गया था, बिना माता–पिता के। अदन के बाग में, आदम और हव्वा के माता–पिता नहीं थे और परमेश्वर ने उन्हें चमत्कारिक रूप से बनाया। ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसके लिए असंभव हो।

जिब्राईल स्वर्गदूत ने मरियम को समझाया कि पवित्र आत्मा उस पर आएगा और वह एक बेटे को गर्भ धारण करेगी। इब्रानियों 3:7 "सो जैसा पवित्र आत्मा कहता है, कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो।" तुम्हारा और मेरा काम क्या है? पवित्र आत्मा हमारे लिए क्या कहता है, उसका आज्ञाकारी होना।

इस दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे आत्मा पूरा नहीं कर सकता। यदि हमारे पास नौकरी नहीं है, तो परमेश्वर प्रदान करेगा; जो लोग विवाहित होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, परमेश्वर जीवन साथी ला सकते हैं; जो लोग बाँझ हैं उन्हें भी परमेश्वर का आशीर्वाद मिलेगा; जो लोग बेघर हैं, परमेश्वर उन्हें घर प्रदान कर सकते हैं। हर काम में, परमेश्वर हमारी कमी को पूरा कर सकते है और हमारे लिए प्रदान कर सकते है। वह अपने कामों में पराक्रमी है और हमारे लिए योजना बना रहे है। वह आदि और अंत है। इसलिए, यूसुफ और मरियम के बीच पति और पत्नी के रिश्ते के बिना, यीशु का इस दुनिया मैं जन्म हो सकता है। वही परमेश्वर आपके और मेरे लिए कहते है "मेरे लिए कुछ भी कठिन है, मेरे लिए कुछ भी कठिन है?" वचन कहता है "परमेश्वर के साथ सभी चीजें संभव हैं"। हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान और सर्व ताकतवन है!

27 नवंबर 2019 को हमने मुंबई के कोहिनूर सिटी मॉल में एक नया चर्च खोला है। हमारे प्रारंभिक समारोह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यू वाचा चर्च, मदुरई के पास्टर डॉ. डी जेस्टिन थे। यह वास्तव में परमेश्वर का वचन था जो उनके माध्यम से उन्होंने उपदेश दिया और वही वचन दिया जो स्वर्गीय भाई डी जी एस दिनाकरन ने मुझे 19 साल पहले दिया था। इसलिए पवित्र आत्मा ने पुनः पुष्टि की कि हमारा परमेश्वर कल, आज और हमेशा के लिए एक ही है। इसके अलावा, जब भी चर्च में पवित्र आत्मा मुझसे बात करता है, तो यह हमेशा पुष्टि करता है कि "मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं हमेशा" जो कि पास्टर डॉ.

डी जेस्टिन के संदेश प्रेरितों के काम 18ः 9–10, के माध्यम से फिर से पुष्टि की गई थी "... क्योंकि मैं तेरे साथ हूं:... "

मेरा मानना है कि नासरत के यीशु ने इस शब्द के अनुसार मुझे, मेरे परिवार के सदस्यों और मेरी मण्डली को आशीर्वाद देना जारी रखा है, क्योंकि यीशु जीवित है।

प्रभु आप सभी पढ़नेवाले को आशीर्वाद दे और प्रभु मैं आप सभी को बहुत खुश क्रिसमस और समृद्ध नये साल शुभकामनाएँ देती हूँ ।

जब तक हम फिर से मिलते हैं ...

पास्टर सरोजा एम

जो प्रभु का भय मानते हैं, उन्हें कुछ भी घटी न होगी!

प्रेरितों के काम 18 : 6–7 ''6 परन्तु जब वे विरोध और निन्दा करने लगे, तो उस ने अपने कपड़े झाड़कर उन से कहा; तुम्हारा लहू तुम्हारी गर्दन पर रहेः मैं निर्दोष हूंः अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊंगा।7 और वहां से चलकर वह तितुस युस्तुस नाम परमेश्वर के एक भक्त के घर में आया, जिस का घर आराधनालय से लगा हुआ था।'' यीशु मसीह ने प्रेरित पौलुस के माध्यम से कई चमत्कार किए, लेकिन यहूदा के लोगों ने इनमें से किसी भी चमत्कार को स्वीकार नहीं किया। एक नबी का अपने देश में सम्मान नहीं है। यीशु मसीह स्वर्गीय राज्य छोड़ कर हमारे खातिर इस दुनिया में आए। इस दुनिया में, प्रभु ने कई चमत्कार किए और अपने पिता परमेश्वर की इच्छा के अनुसार शक्तिशाली काम किए। लेकिन, कई लोगों ने इन चमत्कारों और महान कार्यों को स्वीकार नहीं किया। यीशु कहते है यूहन्ना 1: 11 ''वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।'' यीशु मसीह के जन्म से पहले, 9 पीढ़ियों के पहले, अहाब नामक एक राजा रहता था। यह राजा बहुत ही क्रूर राजा था। उसकी रानी इज़ेबेल थी, वह राजा से भी बदतर थी। दोनों मूर्ति पूजा में शामिल थे। उन्होंने विदेशों से कई मूर्तियों को मंगवाया और उनकी पूजा की। उन्होंने इन मूर्तियों की देखभाल के लिए 450 बाल पूजा करने वाले पुजारी भी रखे थे, और उन्हें अपने देश में सभी सुविधाएं प्रदान करते थे। इस प्रकार, इस्राएल में मूर्ति पूजा का प्रसार किया गया और इस्राएलियों को मूर्ति पूजा करने के लिए मजबूर किया गया। उस समय, परमेश्वर ने इस्राएल में एलिय्याह नाम के एक शक्तिशाली नबी को उठाया। नबी एलिय्याह इस्राएलियों को देख रहे थे जो मूर्तिपूजकों में बदल गए थे, वे मूर्तियों के सामने नाचते थे, गाते थे, स्तुति करते थे, बच्चे की बलि देते थे और प्रार्थना करते थे कि बारिश आकाश से नीचे आए और उन्हें आशीर्वाद दे। लेकिन नबी एलिय्याह इन मूर्तिपूजकों से बहुत नाराज थे, उनकी सभी मूर्ति पूजा को देखकर, वह इन लोगों के इस आनंद को समाप्त करना चाहते थे। इसलिए नबी एलिय्याह ने 3 साल और 6 महीने के लिए इस देश में बारिश को रोकने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। प्रभु ने नबी एलिय्याह की प्रार्थना सुनी और बारिश को रोक दिया। इस्राएलियों ने अब बारिश के लिए और अधिक सख्ती से उनकी मूर्तियों की पूजा शुरू कर दी, लेकिन बारिश नहीं हुई। अब देश में सूखा और अकाल की स्थिति थी। लोगों को अपने देश में न भोजन और न पानी के स्थिति के साथ गंभीर सूखे का सामना करना पड़ा।

लेकिन परमेश्वर ने अपने विश्वासयोग्य नबी एलिय्याह के लिए प्रदान किया। परमेश्वर ने सबसे पहले नाले के पास एलिय्याह को खिलाने के लिए एक काले कौवे को तैयार किया। 1 राजा 17: 6 ''और सवेरे और सांझ को कौवे उसके पास रोटी और मांस लाया करते थे और वह नाले का पानी पिया करता था।'' दूसरी बार, परमेश्वर ने एलिय्याह को खिलाने के लिए एक विधवा को तैयार किया। वह एलिय्याह को सिरापन(सैदा) जो की एक विधवा थी उसके घर भेजा, जो की सारपत नाम की एक जगह पर उसे भोजन उपलब्ध हो जाए ऐसा प्रभंद किया। आइए हम पढ़ते हैं 1 राजा 17: 10–13 ''10 सो वह वहां से चल दिया, और सारपत को गया; नगर के फाटक के पास पहुंच कर उसने क्या देखा कि, एक विधवा लकड़ी बीन रही है, उसको बुलाकर उसने कहा, किसी पात्र में मेरे पीने को थोड़ा पानी ले आ। 11 जब वह लेने जा रही थी, तो उसने उसे पुकार के कहा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ। 12 उसने कहा, तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल है, और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिए जाती हूँ कि अपने और अपने बेटे के लिये उसे पकाऊं, और हम उसे खाएं, फिर मर जाएं। 13 एलिय्याह ने उस से कहा, मत डर; जा कर अपनी बात के अनुसार कर, परन्तु पहले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बना कर मेरे पास ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिये बनाना।'' परमेश्वर ने एलिय्याह को सिदोन क्यों भेजा? क्योंकि राजा अहाब और रानी इज़ेबेल सिदोनियन थे। तीसरी बार, परमेश्वर ने एलिय्याह को एक स्वर्गदूत के माध्यम से खिलाया, आइए हम पढ़ें 1 राजा 19: 5 ''चह झाऊ के पेड़ तले लेटकर सो गया और देखो एक दूत ने उसे छूकर कहा, उठ कर खा।'' इस प्रकार, सूखे की स्थिति में भी, प्रभु ने अपने पराक्रमी नबी एलिय्याह को नहीं छोड़ा, बल्कि उसके लिए विभिन्न माध्यमों से सहायता की।

जबकि 450 बाल नबियों को राजा अहाब और ईज़ेबेल द्वारा खिलाये जा रहे थे और देख रेख की जा रही थी, आश्चर्य कि बात यह है की उस देश में सूखे की स्थिति के दौरान उन सभी के साथ क्या हुआ होगा ? आए हम इस पर विचार करते हैं। हम निश्चित रूप से जानते हैं कि हमारे महान प्रभु ने कौवे, विधवा और उसके स्वर्गदूत के माध्यम से अपने पराक्रमी नबी एलिय्याह को समय पर भोजन प्रदान किया। वही परमेश्वर आज भी हमारे साथ है, अगर हम परमेश्वर के लिए विश्वास में खड़े रहते हैं, तो इस दुनिया में खुद को मूर्तिपूजक से दूर रखें, चाहे देश में बारिश हो या न हो, परमेश्वर हमें कभी नहीं छोड़ेंगे। वह हमारी हर जरूरत को पूरा करेंगे। ठीक उसी तरह जैसे कि नबी एलिय्याह को परमेश्वर की सेवा करने के लिए उसके भीतर जोश भरा था और बाल की मूर्ति पूजा करने वालों को दंडित करने का मन्न था। इस प्रकार उसने भूमि को शाप दिया और बारिश रोकने के लिए प्रभु से प्रार्थना की, ताकि ये मूर्तिपूजक पीड़ित हों, क्योंकि वे प्रभु को भूल गए थे। वही प्रभु आज भी हमें कभी नहीं छोड़ेगा। आइए पढ़ें यूहन्ना 21: 9 ''जब किनारे पर उतरे, तो उन्होंने कोएले की आग,

और उस पर मछली रखी हुई, और रोटी देखी।'' यहाँ हम देखते हैं कि यीशु मसीह ने अपने शिष्यों के लिए नाश्ता तैयार किया था और यह जानकर कि वे भोजन के भूखे होंगे, उनके लिए नाश्ता तैयार रखा था। हम प्रभु को देखते हैं कि यीशु अपने शिष्यों से कितना प्रेम करते थे। प्रभु आज भी वही है, वह हमें भी प्यार करते है। हमें भी बदले में उससे प्यार करना चाहिए। जब हम प्रभु पर ध्यान केंद्रित रहेंगे, तो वह हमारा देनेवाला प्रभु है, वह हमारी सभी जरूरतों का ध्यान रखेंगे। इस प्रकार, हमें हमेशा प्रभु का पीछा करना चाहिए। भजन संहिता 34 : 10 ''जवान सिंहों तो घटी होती और वे भूखे भी रह जाते हैं; परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु की घटी न होगी।'' इस सूखे की स्थिति की कल्पना करें, यहां तक कि जानवर भी मर गए होंगे, लेकिन प्रभु के बच्चों के लिए प्रभु का वादा है कि जब वे उस पर भरोसा करेंगे तो कोई भी भूखा नहीं सोएगा। जिस तरह प्रभु ने सूखे के समय में अपने नबी एलिय्याह को भोजन उपलब्ध कराया था, ठीक वैसा ही प्रभु आज भी हमें खिलाएंगे।

हमारे प्रभु का नाम क्या है? 2 राजा 2: 14 ''और उसने एलिय्याह की वह चद्दर जो उस पर से गिरी थी, पकड़ कर जल पर मारी और कहा, एलिय्याह का परमेश्वर यहोवा कहां है? जब उसने जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो गया और एलीशा पार हो गया।'' हमारे प्रभु का नाम एलिय्याह का परमेश्वर'' है। यहां तक कि अगर हम प्रभु के लिए यह ही उत्साह रखते है, तो हमारे प्रभु हमें कभी भी नहीं त्यागेंगे। हमारे प्रभु के 279 नाम हैं, उनके नाम के साथ अनुसरण करनेवाला / शिष्यों के नाम भी जोड़े जाते हैं। उदाहरण के तोर पे हमारा प्रभु है – इब्राहीम का परमेश्वर, याकूब का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर। आइए हम दानिय्येल 3: 28 '' नबूकदनेस्सर कहने लगा, धन्य है शद्रक, मेशक और अबेदनगो का परमेश्वर, जिसने अपना दूत भेज कर अपने इन दासों को इसलिये बचाया, क्योंकि इन्होंने राजा की आज्ञा न मान कर, उसी पर भरोसा रखा, और यह सोच कर अपना शरीर भी अर्पण किया, कि हम अपने परमेश्वर को छोड़, किसी देवता की उपासना या दण्डवत न करेंगे।'' राजा नबूकदनेस्सर ने कहा ''धन्य हो शद्रक, मेशक और अबेदनगो का परमेश्वर''। हमारे प्रभु भी हमारे नाम के साथ उनके नाम को जोड़ेंगे, जब वह हमारे भीतर भी वही उत्साह देखेंगे। जैसे एलिय्याह ने यहोवा को पुकारा, जैसे शद्रक, मेशक, और अबेदनगो ने प्रभु को आग की भट्टी में पुकारा। याद रखें, प्रभु अभिमानों से घृणा करते हैं लेकिन विनम्र को आशीर्वाद देते हैं। प्रभु के बच्चों के रूप में हमें **''यीशु को ऊंचा उठाना चाहिए, ताकि सभी लोग प्रभु के निकट आए''**। यही मुख्य कारण है कि हमारे प्रभु यीशु ने हमारे लिए क्रूस पर अपना जीवन बलिदान किया। हमें उन लोगों के साथ घुलना–मिलना नहीं चाहिए जो मूर्तिपूजक हैं और दूसरे देवताओं के लिए बलिदान करते हैं। हमें कभी किसी मूर्तिपूजक के साथ संगति नहीं करनी चाहिए। जैसे शद्रक, मेशक और अबदनेगो को भट्टी में डाला गया था और उसका तापमान सामान्य से 7 गुना अधिक बढ़ा दिया गया था, फिर भी उन्हें मृत्यु का भय नहीं था, लेकिन खुशी से भट्टी में चले गए। उनका विश्वास जीवित परमेश्वर पर स्थिर था। आइए हम

दानिय्येल 6: 25 – 26 ''25 तब दारा राजा ने सारी पृथ्वी के रहने वाले देश–देश और जाति–जाति के सब लोगों, और भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वालों के पास यह लिखा, तुम्हारा बहुत कुशल हो। 26 मैं यह आज्ञा देता हूं कि जहां जहां मेरे राज्य का अधिकार है, वहां के लोग दानिय्येल के परमेश्वर के सम्मुख कांपते और थरथराते रहें, क्योंकि जीवता और युगानयुग तक रहने वाला परमेश्वर वही है; उसका राज्य अविनाशी और उसकी प्रभुता सदा स्थिर रहेगी।'' यह हमारे पराक्रमी परमेश्वर हैं, आइए हम मूर्तिपूजक का हिस्सा न होकर, प्रभु की सेवा करें। नबी एलिय्याह कहता है 2 राजा : 2: 14 ''पचास पचास सिपाहियों के जो दो प्रधान अपने अपने पचासों समेत पहिले आए थे, उन को तो आग ने आकाश से गिरकर भस्म कर डाला, परन्तु अब मेरा प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरे।'' एलिय्याह का प्रभु कहाँ है? हम जानते हैं कि जब एलीशा ने यरदन नदी के पानी को एलिय्याह के शॉल से मारा, तो पानी दो हिस्सों में बट गया और एलीशा पार हो गया। हमारा प्रभु दानिय्येल का परमेश्वर है, शद्रक, मशक और अबेदनगो का परमेश्वर है। इन सभी लोगों ने बड़े उत्साह के साथ परमेश्वर की सेवा की और इस तरह परमेश्वर ने अपना नाम भी उनके नाम के साथ जोड़ दिया। आइए हम पढ़ें इब्रानियों 11: 16 ''पर वे एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसी लिये परमेश्वर उन का परमेश्वर कहलाने में उन से नहीं लजाता, सो उस ने उन के लिये एक नगर तैयार किया है।'' यहां तक कि अगर हम वही उत्साह के साथ प्रभु परमेश्वर की सेवा करते हैं, तो हमारे प्रभु हमारे नाम के साथ उनका नाम जोड़ देंगे और उन्हें शर्म नहीं आएगी। क्योंकि हमने देखा है कि इन सभी लोगों ने प्रभु का त्याग नहीं किया, बल्कि उन्हें अपने जीवन में हर चीज से पहले रखा और बड़े उत्साह के साथ उनकी सेवा की। इब्रानियों 2: 11 ''क्योंकि पवित्र करने वाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं: इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता।''

प्रभु के लिए हमारी इच्छा ऐसी ही होनी चाहिए। जब नबी एलिय्याह ने प्रार्थना की और 3 साल और 6 महीने तक बारिश को रोका, तो सारपत की भूमि में कई विधवाएं थीं, लेकिन प्रभु ने केवल इस सैदा विधवा को ही क्यों चुना? लूका 4: 24–26 ''24 और उस ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश में मान–सम्मान नहीं पाता। 25 और मैं तुम से सच कहता हूं, कि एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बन्द रहा, यहां तक कि सारे देश में बड़ा आकाल पड़ा, तो इस्राएल में बहुत सी विधवाएं थीं। 26 पर एलिय्याह उन में से किसी के पास नहीं भेजा गया, केवल सैदा के सारपत में एक विधवा के पास।'' क्योंकि रानी ईजेबेल एक सिदोनियन थी। 1 राजा 16: 31 ''उसने तो नबात के पुत्र यारोबाम के पापों में चलना हलकी सी बात जानकर, सीदोनियों के राजा एतबाल की बेटी ईजेबेल को ब्याह कर बाल देवता की उपासना की और उसको दण्डवत किया।'' राजा अहाब ने एक मूर्तिपूजक करने वाले की बेटी ईजेबेल से शादी की, उसने इस तरह पाप किया, लेकिन इससे भी बड़ा पाप यह था कि वह खुद एक मूर्ति पूजक बन गया। यह राजा अहाब द्वारा

किया गया एक बड़ा पाप था। इस प्रकार, प्रभु ने सारपत में सैदा विधवा के घर जाने के लिए नबी एलिय्याह को चुना। परमेश्वर ने एलिय्याह को विधवा के सामने खुद को विनम्र करने की शिक्षा दी थी। आइए हम पढ़ते हैं 1 राजा 17: 12 ''उसने कहा, तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल है, और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिए जाती हूँ कि अपने और अपने बेटे के लिये उसे पकाऊं, और हम उसे खाएं, फिर मर जाएं।'' यदि परमेश्वर को अपने सेवक एलिय्याह को खिलाने की इतनी बड़ी इच्छा थी, तो वह उसे भोजन के लिए एक अमीर आदमी के घर भेज सकता था, लेकिन प्रभु ने एक विधवा को चुना क्योंकि एक अमीर, धनी और बुद्धिमान व्यक्ति प्रभु के वचन पर ध्यान नहीं देता। इस प्रकार, परमेश्वर ने एलिय्याह को एक विधवा के घर भेजा। दुनिया में आज भी, जो मनुष्य सोचते हैं कि वे बुद्धिमान हैं, अमीर हैं और धनी है वे कभी भी प्रभु का वचन नहीं सुनते हैं। प्रभु उन्हें एक बकरी के रूप में जारी रख देते है, लेकिन फैसले के समय के दौरान, वह निश्चित रूप से उन्हें जड़ से उखाड़ देंगे और उन्हें नरक की आग में डाल देंगे। पवित्र शास्त्र में यीशु ने कहा है कि ''अच्छी फसल के साथ जंगली घास बढ़ने दें, फसल कटनी के समय अच्छी फसल पक जाएगी और मेरे गोदाम में भेज दी जाएगी, जबकि जंगली घास को आग में डाल दिया जाएगा''। हम यह न सोचें कि हमारा परमेश्वर हमारे बारे में नहीं जानते है, वह हम में से प्रत्येक के बारे में जानते है और हमारे सभी कार्यों को देखते है। एक दिन, वह हमें अपना फैसला देने के लिए एक न्यायाधीश के रूप में आएंगे। इस प्रकार हमें प्रभु से डरना चाहिए। प्रभु जानते है कि अमीर प्रभु का वचन कभी नहीं सुनेगा, जबकि गरीब और विनम्र उनके वचन का तुरंत पालन करेंगे।

नबी एलीशा के समय में भी, प्रभु ने इसी तरह से काम किया और एक विधवा को आशीर्वाद दिया, आइए हम पढ़ें 2 राजा 4 : 1–7 ''1 भविष्यद्वक्ताओं के चेलों की पत्नियों में से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा, तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए। 2 एलीशा ने उस से पूछा, मैं तेरे लिये क्या करूं? मुझ से कह, कि तेरे घर में क्या है? उसने कहा, तेरी दासी के घर में एक हांड़ी तेल को छोड़ और कुछ नहीं है। 3 उसने कहा, तू बाहर जा कर अपनी सब पड़ोसियों खाली बरतन मांग ले आ, और थोड़े बरतन न लाना। 4 फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा, और द्वार बन्द कर के उन सब बरतनों में तेल उण्डेल देना, और जो भर जाए उन्हें अलग रखना। 5 तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जा कर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बरतन लाते गए और वह उण्डेलती गई। 6 जब बरतन भर गए, तब उसने अपने बेटे से कहा, मेरे पास एक और भी ले आ, उसने उस से कहा, और बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया। 7 तब उसने जा कर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। ओर उसने कहा, जा तेल बेच कर ऋण भर दे; और जो रह जाए, उस से तू अपने पुत्रों

सहित अपना निर्वाह करना।'' एलिय्याह के समय की तरह, सूखे के समय तक आटा और तेल विधवा के घर में खत्म नहीं हुआ, उसी तरह प्रभु ने नबी एलीशा के माध्यम से भी विधवा को आशीर्वाद दिया। 1 राजा 17: 13–14 ''13 एलिय्याह ने उस से कहा, मत डर; जा कर अपनी बात के अनुसार कर, परन्तु पहले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बना कर मेरे पास ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिये बनाना। 14 क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा तब तक न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा, और न उस कुप्पी का तेल घटेगा।'' जबकि विधवा एलिय्याह से कहती है ''केवल थोड़ा आटा और तेल है जो मैं एक रोटी बना सकती हूं और अपने बेटे और अपने आप को खिला सकती हूं। हम इसे खाएंगे और फिर मर जाएंगे''। यहाँ हम देखते हैं कि एलिय्याह ने अपनी भूख मिटाने के लिए रोटी नहीं माँगी, बल्कि उसने विधवा से रोटी माँगी ताकि प्रभु उसे आशीर्वाद दे सके। एलिय्याह केवल विधवा के जीवन में प्रभु की योजना को पूरा करने के लिए एक साधन था। वचन ''14 क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा तब तक न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा, और न उस कुप्पी का तेल घटेगा।'' एलिय्याह ने विधवा से कहा ''पहले मुझे एक छोटी रोटी लाओ और फिर तुम और तुम्हारे बेटे के लिए एक तैयार करो''। इससे हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि, हमें अपना पहला स्थान और अपना पहला फल प्रभु को ही देना चाहिए। हम जानते हैं कि उस देश में सूखा खत्म होने तक विधवा के घर में आटा और तेल कभी कम नहीं हुआ। जब हम प्रभु को अपना पहला फल देते हैं, तो हमारे जीवन में कभी भी किसी चीज की कमी नहीं होगी। याद रखें कि काना नगरी के घर में, यीशु को भी इस शादी में आमंत्रित किया गया था, किसी भी सामान्य घर की तरह, शादी के दौरान दाख रस काम हो गया था। लेकिन यीशु ने इस घर में एक चमत्कार किया और साधारण पानी को दाख रस में बदल दिया और इस शादी के घर में उस कमीपन को दूर किया।

हमें अपना पहला फल परमेश्वर को देना सीखना चाहिए। गिनती 15: 20 ''अपने पहला गूंधे हुए आटे की एक पपड़ी उठाई हुई भेंट करके यहोवा के लिये चढ़ाना; जैसे तुम खलिहान में से उठाई हुई भेंट चढ़ाओगे वैसे ही उसको भी उठाया करना।'' यहाँ इस ऊपरी व्याख्या में लोगों को सिखाया जाता है कि कैसे पहली रोटी बनाया जाए और प्रभु को अर्पित किया जाए और फिर परिवार के साथ भोजन किया जाए। इस आधार पर, हम प्रभु के द्वारा मजबूत होंगे और उसके द्वारा धन्य होंगे। हम सभी के लिए प्रभु की इच्छा है कि हम उनके द्वारा धन्य हो। आइए हम पढ़ें नीतिवचन 3: 9–10 ''9 अपनी संपत्ति के द्वारा और अपनी भूमि की पहली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना; 10 इस प्रकार तेरे खत्ते भरे और पूरे रहेंगे, और तेरे रसकुण्डोंसे नया दाखमधु उमण्डता रहेगा।'' मलाकी 3: 10 ''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा कर के मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोल कर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की

वर्षा करता हूं कि नहीं।'' व्यवस्थाविवरण 28: 12 ''यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोल कर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा; और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा।'' इस प्रकार, प्रभु कहते हैं ''चक के देखो की प्रभु अच्छा है''। हमें कभी भी अपनी आमदनी को पहले हर चीज के लिए बांटना नहीं चाहिए और ऐसा होता है की हम आखिर में प्रभु के बारे में सोचते हैं। प्रभु को यह पसंद नहीं है। हमें हमेशा अपने जीवन में प्रभु को सबसे आगे रखना चाहिए और फिर उनसे अपने आशीर्वाद की अपेक्षा करनी चाहिए। प्रभु को उम्मीद है कि हमारा पहला फल उन्हें दिया जाए और उसके बाद ही वह हमें आशीर्वाद देगा। वचन कहता है ''जो कैसर का है वह कैसर को, और जो परमेश्वर का है परमेश्वर को दो''। फिलिप्पियों 4: 19 ''और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।'' इब्राहीम का परमेश्वर, याकूब का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, दानिय्येल का परमेश्वर हमारे जीवन में कभी भी कुछ कम नहीं करेगा। प्रभु के नाम के साथ हमारा नाम भी जोड़ा जाएगा और वह हमें आशीर्वाद देगा। पवित्र शास्त्र में, हम विधवा और दो तांबे के सिक्कों की कहानी जानते हैं, यीशु मंदिर के भण्डार के सामने खड़े थे और आगे आने वाले सभी चढ़ावे को दान की पेटी में देख रहे थे। इस प्रकार, यीशु ने अपने शिष्यों को इस विधवा के बारे साक्षी देते हुए कहा कि ''उसने प्रभु के लिए अपना सब कुछ अर्पित कर दिया है, कल के बारे में नहीं सोचा''। आइए हम पढ़ें
मरकुस 12: 41–44 ''41 और वह मन्दिर के भण्डार के सामने बैठकर देख रहा था, कि लोग
मन्दिर के भण्डार में किस प्रकार पैसे डालते हैं, और बहुत धनवानों ने बहुत कुछ डाला। 42
इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर दो दमड़ियां, जो एक अधेले के बराबर होती है, डालीं।
43 तब उस ने अपने चेलों को पास बुलाकर उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि
मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है। 44
क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इस ने अपनी घटी में से जो कुछ
उसका था, अर्थात अपनी सारी जीविका डाल दी है।'' हमारे प्रभु नहीं बदले है, वह वही परमेश्वर है जो कल था, आज है, और हमेशा के लिए न बदलनेवाला परमेश्वर है। यह हम हैं जो बदलते हैं। जब हम परमेश्वर के बारे में आखिर में सोचते हैं, तो हम परमेश्वर से कुछ भी अच्छा करने की उम्मीद नहीं कर सकते है। जब हम परमेश्वर को अंतिम स्थान देते हैं, तो हमारा जीवन इस तरह निरर्थक हो जाता है, जैसा कि हम पढ़ते हैं सभोपदेशक 10: 1 ''मरी हुई मक्खियों के कारण गन्धी का तेल सड़ने और बसाने लगता है; और थोड़ी सी मूर्खता बुद्धि और प्रतिष्ठा को घटा देती है।'' जब एक मक्खी तेल की अच्छी बोतल में गिरती है, तो तेल की बोतल एक बेकार चीज़ बन जाती है। इस प्रकार, हमें अपने जीवन को इस तरह बर्बाद नहीं करना चाहिए। प्रभु हर एक की स्थिति को जानते हैं, कुछ भी उससे छिपा नहीं है। प्रभु हमें हर तरह से न्याय करेंगे। जब यीशु अपने चुने हुए लोगों को लेने आएंगे, तो वह धार्मिकता से न्याय करेंगे।

भजन संहिता 50 : 5 ''मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो, जिन्होंने बलिदान चढ़ाकर मुझ से वाचा बान्धी है!'' हमें यीशु मसीह के साथ एक वाचा बनानी चाहिए, जैसे की नबी एलिय्याह, नबी एलीशा, सारपत की विधवा, दूसरी विधवा, उन सभी ने प्रभु को अपने जीवन में पहला स्थान दिया और धन्य हो गए। इस प्रकार, परमेश्वर ने बदले में उनका नाम उन सभी के नमो के साथ जोड़ दिया। हमें यह भी प्रयास करना चाहिए कि प्रभु हमारे नाम को अपने नाम के साथ जोड़े और हमें आशीर्वाद दें।

यह संदेश उन सभी को आशीर्वाद दें जो इसे पढ़ते हैं! प्रभु की स्तुति हो !